विष्णुस्तुति

जय जय सुरनायक जनसुखदायक
प्रनतपाल भगवन्ता।
गोद्विजहितकारी जय असुरारी
सिन्धुसुताप्रियकन्ता॥१
पालन सुरधरनी अद्भुत करनी
मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला
करउ अनुग्रह सोई॥२
जय जय अबिनासी सबघटबासी
ब्यापक परमानन्दा।
अबिगतगोतीतं चरितपुनीतं
मायारहित मुकुन्दा॥३
जेहि लागी बिरागी अति अनुरागी
बिगतमोहमुनिबृन्दा।
निसिबासर ध्यावहिं गुनगुन गावहिं
जयति सच्चिदानन्दा॥४
जेहि सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई
सङ्ग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिन्त हमारी
जानिअ भगति न पूजा॥५
जो भवभयभञ्जन मुनिमनरञ्जन
गञ्जनबिपतिबरूथा।
मनबचक्रमबानी छाडि सयानी
सरन सकलसुरजूथा॥६
सारदश्रुतिसेषा रिषय असेषा
जा कहु कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे
द्रवउ सो श्रीभगवाना॥७
भवबारिधिमन्दर सबबिधिसुन्दर
गुनमन्दिर सुखपुञ्जा।
मुनिसिद्धसकलसुर परमभयातुर
नमत नाथ पद कञ्जा॥८